International Journal of Professional Development
Vol.10,No.1,Jan-June2021 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor: 3.017(IFSIJ)

मानव संसाधन का एक संक्षिप्त अध्ययन – नारनौल तहसील के सन्दर्भ में

शर्मिला, शोधार्थी, सिंघानियां विश्वविद्यालय
पचेरी कलां, झुन्झुनु (राज0)

डॉ0 शर्मिला
शोध निर्देशक, सिंघानियां विश्वविद्यालय, पचेरी कलां, झुन्झुनु (राज0)

डॉ0 विक्रम सिंह
सह निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, नाँगल चौधरी (हरि0)

शोध सार
प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से नारनौल तहसील के मानव संसाधन के बारे में संक्षिप्त विश्लेषण व मूल्यांकन किया गया है जिसके माध्यम से अध्ययन क्षेत्र के मानव संसाधन के तुलनात्मक पहलु को पहचान की जाती है जिसके द्वारा मानव के आर्थिक एवं सामाजिक ढाँचे के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है जो कि मानव विकास का आधार है। मानव स्वयं में एक संसाधन है जो कि विकास का आधार है। इसके बिना विकास की कल्पना नहीं को जा सकती है। अतः किसी भी प्रदेश का अध्ययन करने के लिए हमें वहाँ के मानव संसाधन के सम्बन्ध में आवष्यक जानकारियां पता होनी चाहिए। यदि हमें इस सम्बन्ध में जानकारियां नहीं हैं तो उस क्षेत्र विषेश का अध्ययन नहीं किया जा सकता है। अतः मानव संसाधनों में सर्वोपरी है इसकी किसी भी प्रकार से अवहेतना नहीं की जा सकती है। अन्त में प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से मानव संसाधन का विश्लेषण किया गया है ताकि शोध क्षेत्र का सतत् विकास किया जा सके, विकासकारी योजनाओं को गति दी जा सके।

परिचयः
मानव स्वयं में एक संसाधन है जो की किसी क्षेत्र का महत्वपूर्ण घटक है। जो भिन्न–भिन्न साधनों को संसाधनों में परिणित कर संसाधनों का निर्माण व उपयोग निरन्तर करता रहता है। मनुष्य द्वारा मुख्य रूप से जैविक एवं अजैविक संसाधनों का उपभोग कर प्राकृतिक पर्यावरण में निरन्तर बदलाव लाने का कार्य करता है। मनुष्य द्वारा अपनी जरूरतों के अनुरूप भूमि, जल, वनस्पति आदि संसाधनों का उपभोग किया जाता है। इनकी जरूरतों तथा पूर्ति के मध्य सांस्कृतिक पर्यावरण में भर निरन्तर व बदलाव देखे जाते हैं। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या के कारण अंधाधुन्ध गति से संसाधनों का उपयोग मानव द्वारा किया जा रहा है। अत्यधिक अन्न उत्पादन की लालसा के कारण मानव द्वारा भूमि व जल संसाधन का अत्यधिक मात्रा में उपयोग हुआ है जिसके कारण अनेकानेक संसाधन विलुप्त होने के कगार तक आ पहुँचे हैं
इसके साथ–साथ प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से शोध क्षेत्र के मानव संसाधन का विस्तृत रूप से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ताकि मानव संसाधन के सम्बन्ध मं समस्याओं पर गहन रूप से प्रकाश डाला गया है ताकि उन समस्याओं का निदान कर सतत् विकास किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्रः
शोध पत्र के लिए चुन गया क्षेत्र हरियाणा प्रदेष के दक्षिणी भाग में स्थित तहसील है जिसकी उपोष्ण कटिबन्धीय जलवायु है। इसको नारनौल तहसील के नाम से जाना जाता है जो कि महेन्द्रगढ़ जिले में स्थित है। इस प्रकार शोध क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 24^0 41′ से उ0 से 28^0 13′ उ0 अक्षांष एवं 75^0 56′ पूर्व से 76^0 21′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस प्रकार शोध पत्र में वर्णित भू–भाग का कुल रकबा 95446 हैक्टेयर है जो कि महेन्द्रगढ़ जिले का लगभग 50 प्रतिषत भाग है। इस प्रकार शोध क्षेत्र की कुल आबादी वर्ष 2011 के अनुसार 517707 व्यक्ति जिसमें 273774 पुरूष एवं 243933 महिलाएं हैं। अध्ययन क्षेत्र का लिंगानुपात 891 व्यक्ति तथा साक्षरता 68.14 प्रतिषत देखी जाती है।

सांख्यिकीय संरचना (वर्ष 2011)

विवरण	हरियाण	नारनौल तहसील
क्षेत्रफल	44212 वर्ग किमी0	954.46 वर्ग किमी0
कुल जनसंख्या	25351462 व्यक्ति	517707 व्यक्ति
पुरूष जनसंख्या	13494734 व्यक्ति	273774 व्यक्ति
महिला जनसंख्या	11856728 व्यक्ति	243933 व्यक्ति
जनसंख्या वृद्धि दर	19.90 प्रतिशत	12.58 प्रतिशत
नगरीय जनसंख्या	8842103 व्यक्ति	90738 व्यक्ति
ग्रामीण जनसंख्या	16509359व्यक्ति	426969 व्यक्ति
लिंगानुपात	879 प्रतिशत	891 प्रतिशत
ग्रामीण लिंगानुपात	882 प्रतिशत	893 प्रतिशत
शहरी लिंगानुपात	873 प्रतिशत	883 प्रतिशत
साक्षरता जनसंख्या	75.55 प्रतिशत	68.14
प्रतिशत लिंगानुपात		
घनत्व	573 वर्ग किमी0	543 वर्ग किमी0

www.ijpd.co.in

Source: Department of Economic and Statical Analysis, Haryana

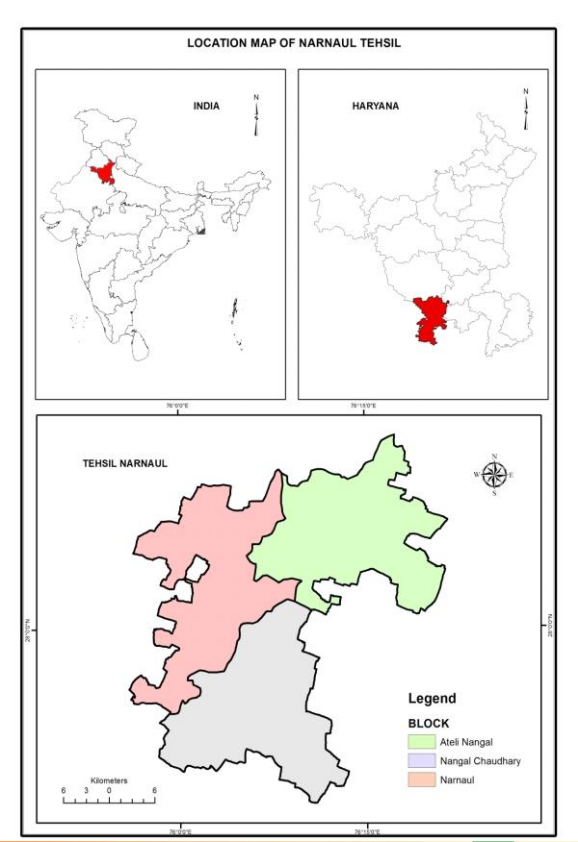

शोध पत्र परिकल्पनाऐं:

प्रस्तुत शोध पत्र की निम्न परिकल्पनाऐं रही हैं जिनके आधार पर शोध क्षेत्र का अध्ययन किया गया ह जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है:

1. अधिक मानव आबादी क कारण षोध क्षेत्र का भू–दृश्य बदल रहा है।
2. सतत् विकास में अधिक आबादी बाधाक सिद्ध हो रही है।
3. विगत 5 दशकों से मानव आबादी तीव्र गति से बढ़ी है।
4. मानव आबादी से जंगल, जमीन, जीवन का स्वरूप बदल रहा है।

उपर्युक्त परिकल्पनाऐं शोध क्षेत्र का आधार रही है। इन्हीं के आधार पर शोध पत्र का विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया है।

शोध के उदेश्य:

प्रस्तत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य तीव्र गति से बढ़ती मानव आबादी जनित समस्याओं को उजागर कर अध्ययन करना है जिनके माध्यम स उपरोक्त समस्याओं का निदान कर सतत् विकास को गति प्रदान की जा सके। प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य रहे है जिनका वर्णन निम्त प्रकार से है:

1. मानव गति समस्याओं का अध्ययन करना।
2. मानव संसाधन प्रबन्धन नीति निर्माण करना।
3. सतत् विकास को गति प्रदान करना।

समस्याऐं:

प्रस्तुत शोध पत्र की निम्न समस्याऐं हैं जिनका वर्णन निम्न प्रकार से किया जा रहा है:–

आर्थिक एवं सामाजिक समस्याऐं:

बेरोजगारी–शोध क्षेत्र नारनौल तहसील में अनुकुल जलवायु होने के कारण संघन रूप से कृशि कार्य किया जाता है इसके साथ–साथ अन्य कारण भी मानव जीवन के अनुकूल जिसके कारण घनी मानव आबादी देखने को मिलती है। तालिका अध्ययन द्वारा आसानी से ज्ञात होता है कि यहाँ जनघनत्व देश के औसत जनघनत्व से काफी अधिक है जो कि 543 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 के रूप में देखा जा सकता है। इससे यह साफ–साफ ज्ञात होता है कि षोध क्षेत्र में जनघनत्व की अधिकता होने के कारण काष्तकारों के समक्ष ही नहीं वरन् अन्य लोगों को भी बेरोजगारी की समस्या से झूझना पड़ता ह।

संसाधनों पर अधिक दबाव:

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में अध्ययन क्षेत्र की अधिकांष आबादी कृषि कार्य में संलिप्त पाई जाती है जिसके कारण कृषि संसाधन पर दबाव पाया जाता है। काष्तकारों के पास प्रति ईकाई के हिसाब से भूमि संसाधन की उपलब्धता सीमित होती चली जाती है जिसके कारण भूमि कृशि संसाधन पर दबाव बढ़ता चला जाता है जिसके कारण काष्तकारों को भिन्न–भिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इसके साथ–साथ घनी आबादी होने के कारण आधारभूत सुविधाऐं भी आम आदमी को सर्वषुलभ आसानी से पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं हो पाती है जैसे– चिकित्सा सुविधाऐं इत्यादि। जिनके कारण मानव विकास ठहर–सा जाता है।

लघु उद्योगोंक का अभाव:

शोध क्षेत्र नारनौल तहसील में काष्तकारों द्वारा सघन रूप से कृशि कार्य किया जाता है इसके साथ–साथ यहाँ लघु उद्योगों का अभाव देखा जाता है। प्राचीन भारत में अधिक मात्रा में लघु उद्योग पाए जाते थ जिनमें कृशक समुदाय अपना कृषि काश्त के साथ–साथ उद्योग जगत में भी श्रम दे पाता था वहीं आज लघु उद्योग के पतन व अभाव के कारण काष्तकारों के पास सीमित विकल्प पाए जाते हैं जिसके कारण उनको आर्थिक समस्याओं से सामना करना पड़ता है।

नवीन तकनीक जनित समस्याऐं:

प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसी कार्य को सरल व सरस बनाया जाता है जो कि एक सहयोगी की भूमिका अदा करता है। शोध क्षेत्र नारनौल तहसील में नई कृशि प्रौद्योगिकी अपनाने में मुख्य ध्यान हरित कांति के दौरान उच्च उपज किस्म के बीजों के इस्तेमाल, सिंचाई की मात्रा बढाने, रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग आदि पर बल रहा है। कृशि के समक्ष प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कृशि कार्य को सरल व सुगम बनाने के लिए किया गया था परन्त् इसी प्रौद्योगिकी के अत्यधिक इस्तेमाल के कारण कई प्रकार की समस्याओं की उत्पति होती ह जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है:

www.ijpd.co.in

- शोध क्षेत्र नारनौल तहसील के काष्तकारों द्वारा तेजी से कृषि उत्पाद बढाने की चाह के कारण अन्धाधुन्ध मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल किया जाता है जिसके कारण मृदा पर नकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते हैं। ऐसी स्थिति में रासायनिक उर्वरक मिट्टी में उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्वों के सन्तुलन को असन्तुलित कर देते हैं। ये रासायनिक उर्वरक व कीटनाषक सतही जल में घुलकर भूमिगत जल को प्रदूषित करने का कार्य करते हैं जिसका वर्णन तालिका के माध्यम से प्रदर्षित किया गया है जिसके कारण लोगों को स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- शोध क्षेत्र नारनौल तहसील मं काष्तकारों द्वारा आधुनिक कृषि मशीनों पर अत्यधिक इस्तेमाल पर ध्यान दिया जा रहा है जिसके कारण तेजी से इनकी संख्या बढ़ती जा रही है जिसके कारण मानवीय श्रम पर निर्भरता घटती हुई प्रतीत होती है जिसके कारण वैकल्पिक रोजगार की तलाश में कृषि श्रमिक अन्य क्षेत्रों की और पलायन करने पर मजबूर हो रहा है।
- शोध क्षेत्र नारनौल तहसील में नलकूपों व पम्प सैटों के माध्यम से काष्त सिंचाई की जाती है जिसके कारण भूमिगत जल का अत्यधिक मात्रा में इस्तेमाल के कारण भू–जल स्तर अत्यधिक नीचे चला गया है और इसके साथ–साथ भू–जल भण्डार सीमित होते नजर आ रहे हैं जिससे कृषि सिंचाई के समक्ष चुनौतिपूर्ण वातावरण बनता जा रहा है।

इन उपर्युक्त समस्याओं के निदान से ही शोध क्षेत्र का सतत् एवं पोशणीय विकास संभव हो सकेगा अन्यथा इनको नाना प्रकार की समस्याओं से सामना करना पड़ सकता है।

सुझावः

प्रस्तुत शोध पत्र में उपरोक्त वर्णित समस्याओं के समाधान के बिना अध्ययन क्षेत्र का सतत् विकास संभव नहीं हो सकेगा इसलिए इन उपर्युक्त समस्याओं के समाधान सुझाए गए हैं जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है:–

- शोध क्षेत्र नारनौल तहसील में औद्योगिक विकास को गति देनी चाहिए इसके लिए मूलभूत सुविधाएँ औद्योगिक जगत को प्राप्त कराई जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त औद्योगिक लुभावनी योजनाओं का निर्माण षासन व प्रषासन द्वारा कियान्वयन किया जाना चाहिए। आम जन को रोजगार उपलब्ध हो सके इसके लिए लघु उद्योग पर अधिक बल दिया जाना चाहिए ताकि अधिक लोगों को औद्योगिक जगत का लाभ मिल सके तथा सबका विकास सुनिश्चित हो सके।

इसके साथ–साथ अधिक से अधिक स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया जा सके ताकि बेरोजगारी की समस्या से निजात मिल सके।

1. शोध क्षेत्र में आम जन को परिवार कल्याण योजनाओं से परिचित करवाया जाना चाहिए ताकि साधारण व्यक्ति भी छोटा परिवार सुखी परिवार की अवधारणा को पहचान सके ताकि तीव्र बढ़ती जनसंख्या पर अंकुष लगाया जा सके जिससे संसाधन सभी व्यक्तियों को पर्याप्त मात्रा में सर्वसुलभ कराऐ जा सकें अर्थात् संसाधन पर दबाव घट सके।
2. शोध क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए लागों को लघु उद्योगों पर अधिक बल देने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। लघु उद्योग यदि अधिक होंगे तो लोगों को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार उपलब्ध होंगे जिससे उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं से निजात मिल सकेगी।
3. शोध क्षेत्र में काष्तकारों द्वारा अधिक काष्त उत्पादन बढाने की लालसा के कारण रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जिससे कई समस्याऐं उत्पन्न होती हैं इसके निजात के लिए काष्तकारों को जैविक उर्वरकों के प्रयोग के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि इन गम्भीर समस्याओं से निजात मिल सके।
4. शोध क्षेत्र में भू–जल प्रयोग की जगह काष्तकारों को सिंचाई के रूप में वैकल्पिक जल की व्यवस्था कराई जानी चाहिए तथा इसके साथ–साथ नवीन तकनीक सिंचाई पद्वति का इस्तेमाल किया जाना चाहिए ताकि भू–जल का संरक्षण किया जा सके।

उपर्युक्त सुझावों के माध्यम से शोध क्षेत्र का सतत् विकास संभव हो सकेगा।

निष्कर्षः

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से मानव संसाधन का एक संक्षिप्त अध्ययन नारनौल तहसील के सन्दर्भ में किया गया है। जिसके माध्यम से मानव संसाधन को प्रमुख आधार मानकर व्यवस्थित अध्ययन किया गया है जिसके द्वारा मानव कल्याण की धारणा को बल दिया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Jha, C.K. and Sharma, R.K. (1992): Agro Perspective.Ashish Publishing House, New Delhi.
2. खुल्लर, डी.आर., (2002): प्रयोगात्मक भूगोल के तत्व, न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कम्पनी, जालन्धर।
3. गुर्जर, आर. के. (1992) : इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. जाट, बी.सी. (2007) : राजस्थान विकास मानचित्रों में, श्याम प्रकाशन, जयपुर।

www.ijpd.co.in

5. खुल्लर, डी.आर., (2002): प्रयोगात्मक भूगोल के तत्व, न्यूएकेडमिक पब्लिशिंग कम्पनी, जालन्धर।

www.ijpd.co.in